

अपने जीवन के अनुभव का विवरण देते हुए, सुलैमान ने परमेश्वर से अलग खुशी और संतोष की खोज के जीवन भर के निष्कर्षों को दर्ज किया है। उनका जर्नल तीन मुख्य भागों में विभाजित है:

1. परिचय - 1:1-18
2. अन्वेषण - 2:1-6:9
3. सारांश - 6:10-12:14

हमने देखा है कि परिचय में वह घोषणा करता है कि जो जीवन बिना विश्वास और परमेश्वर की आज्ञा पालन के जिया जाए, वह निरर्थक पाया जाएगा। यह सभोपदेशक के परिचयात्मक भाग की मुख्य सामग्री है। यदि जांच नहीं की जाए तो कोई व्यक्ति इन सत्यताओं से अनजान होकर जीवन व्यतीत कर सकता है। खोजपूर्ण भाग में विभिन्न चीजों का वर्णन है जो सुलैमान ने अपनी खोज में कीं, जो अंततः उसे उस निष्कर्ष तक ले गईं।

अध्याय 2-6 में वह चार मुख्य प्रयासों का वर्णन करता है जिन्हें उसने जांचा:

1. सुख की खोज।
2. ज्ञान और मूर्खता की खोज।
3. अर्थपूर्ण कार्य की खोज।
4. शक्ति और धन की खोज।

इस अध्याय में हम इनमें से पहले का अध्ययन करेंगे जो सुख की खोज है।

मैंने अपने मन में कहा, “मुझे मनो विनोद करना चाहिए। मुझे हर वस्तु का जितना रस मैं ले सकूँ, उतना लेना चाहिये।” किन्तु मैंने जाना कि यह भी व्यर्थ है।

- सभोपदेशक 2:1

सुलैमान ने अपनी खोज वहीं से शुरू की जहाँ हम में से अधिकांश लोग करते हैं: इंद्रिय सुखों की खोज में। वह अच्छा महसूस करने के लिए जो कुछ भी कर सकता था! याद रखें, उसके पास कल्पना, समय, धन और प्रभाव था कि वह जो चाहे आजमा सकता था। कुछ भी उसकी पहुँच से बाहर नहीं था।

2:1a: सुलैमान अपनी यात्रा की शुरुआत में अपने "स्वयं से वार्तालाप" की समीक्षा करता है जहाँ वह अपने हाथों को रगड़ता है, उन सुखों की तीव्र प्रत्याशा में जो वह स्वयं के लिए प्राप्त करने वाला था।

2:1b: जैसा कि पिछले भाग में, वह अपने अनुभव का वर्णन करने से पहले हमें निष्कर्ष देता है। निष्कर्ष यह है कि कामुकता व्यर्थ, खाली है और कोई स्थायी संतोष नहीं देती।

वह आगे कई क्षेत्रों का वर्णन करता है जहाँ उसने अपनी इच्छाओं को पूरी तरह से व्यक्त किया:

1. हँसी - बनाम 2

हर समय हँसते रहना भी मूर्खता है। मनो विनोद से मेरा कोई भला नहीं हो सका।

- सभोपदेशक 2:2

वह मनोरंजन के लिए लगातार आने वाले कलाकारों और सामग्री के माध्यम से आनंद और खेल का अनुभव करता था जो हँसाने के लिए बनाए गए थे। हास्य कलाकार, जोकर और नाटक जो किसी को हँसाते रहते। सुलैमान स्वस्थ हास्य भावना के महत्व को कम नहीं आंकते, बल्कि यह कि मनोरंजन (आप एक क्षण के लिए पागल हो जाते हैं; आप हँसी के माध्यम से बच निकलते हैं) किसी भी मात्रा में हो, स्थायी संतोष नहीं लाता।

2. शराब का सेवन - बनाम 3

सो मैंने निश्चय किया कि मैं अपनी देह को दाखमधु से भर लूँ यद्यपि मेरा मस्तिष्क मुझे अभी ज्ञान की राह दिखा रहा था। मैंने यह मूर्खता पूर्ण आचरण किया, क्योंकि मैं आनन्द का कोई मार्ग ढूँढना चाहता था। मैं चाहता था कि लोगों के लिये अपने जीवन के थोड़े से दिनों में क्या करना उत्तम है, इसे खोज लूँ।

- सभोपदेशक 2:3

सुलैमान शराबी नहीं बने ("मेरी बुद्धि मुझे समझदारी से मार्गदर्शन कर रही है") लेकिन वे उत्तम शराब के जानकार जरूर बन गए, उन्होंने इस पदार्थ की सराहना को उसकी अधिकतम खुशी तक विकसित किया बिना इसके आदी हुए (जो बहुत कम लोग कर पाते हैं)। हालांकि, यह भी उन्हें वह संतोष नहीं दे सका जिसकी वे इच्छा रखते थे।

3. निर्माण परियोजनाएँ - बनाम 4-6

⁴ फिर मैंने बड़े-बड़े काम करने शुरू किये। मैंने अपने लिये भवन बनवाएँ और अँगूर के बाग लगवाए। ⁵ मैंने बगीचे लगवाएँ और बाग बनवाए। मैंने सभी तरह के फलों के पेड़ लगवाये। ⁶ मैंने

अपने लिये पानी के तालाब बनवाए और फिर इन तालाबों के पानी को मैं अपने बढ़ते पेड़ों को सींचने के काम में लाने लगा।

- सभोपदेशक 2:4-6

उसने महत्वाकांक्षी सार्वजनिक कार्य परियोजनाओं को भी पूरा किया (कुछ बनाने में कितना संतोष होता है)। उसके शासनकाल के दौरान घर, कारखाने, पार्क, तालाब (फव्वारे) डिजाइन और बनाए गए।

4. कामुकता - बनाम 7-8

⁷ मैंने दास और दासियाँ खरीदीं और फिर मेरे घर में उत्पन्न हुए दास भी थे। मैं बड़ी बड़ी वस्तुओं का स्वामी बन गया। मेरे पास झुँड के झुँड पशु और भेड़ों के रेवड़ थे। यरूशलेम में किसी भी व्यक्ति के पास जितनी वस्तुएँ थीं, मेरे पास उससे भी अधिक वस्तुएँ थीं।

⁸ मैंने अपने लिये चाँदी सोना भी जमा किया। मैंने राजाओं और उनके देशों से भी खजाने एकत्र किये। मेरे पास बहुत सी वेश्याएँ थीं।

- सभोपदेशक 2:7-8

वह उन लोगों और वस्तुओं की सूची बनाता है जिन्हें उसने इकट्ठा किया। 1 राजा 11:3 कहता है कि उसके पास 700 पत्नियाँ और राजकुमारियाँ थीं, साथ ही 300 वेश्या भी थीं। उसके पास असीमित कामुक, इंद्रिय अनुभव उपलब्ध थे। उसके पास मनोरंजन, सेवा और यौन विविधता की कोई सीमा नहीं थी।

1 राजा 11:3b में फुटनोट हमें बताती है कि सुलैमान की विदेशी पत्नियों की अधिकता थी, जो उनकी कामुकता के कारण नहीं बल्कि उनकी मूर्तिपूजा के कारण, सुलैमान के हृदय को परमेश्वर से दूर ले गईं। सुलैमान विश्वासघाती था, न कि इसलिए कि उसकी कई पत्नियाँ थीं, बल्कि इसलिए कि उसकी पत्नियाँ और कन्याएँ मूर्तिपूजक थीं।

इन सभी इंद्रिय सुखों के बावजूद वह अंततः घोषणा करता है कि ये उसे ऊब और निराशा में छोड़ गए।

5. अच्छा जीवन - बनाम 9-10

⁹ मैं बहुत धनवान और प्रसिद्ध हो गया। मुझसे पहले यरूशलेम में जो भी कोई रहता था, मैं उससे अधिक महान था। मेरी बुद्धि सदा मेरी सहायता किया करती थी। ¹⁰ मेरी आँखों ने जो कुछ देखा और चाहा उसे मैंने प्राप्त किया। मैं जो कुछ करता, मेरा मन सदा उससे प्रसन्न रहा करता और यह प्रसन्नता मेरे कठिन परिश्रम का प्रतिफल थी।

- सभोपदेशक 2:9-10

सुलैमान अपने आप को दूसरों द्वारा देखा गया एक ऐसा व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है जो सुखी जीवन जी रहा है, धनवान है और अपने लिए कुछ भी मना नहीं करता। इस सुखी जीवन के लिए पुरस्कार थे:

- हँसी - जो आनंद और मुक्ति इसके साथ आती है।
- शराब का सेवन - जो स्वाद और अनुभूति यह देता है।
- निर्माण - उपलब्धि के गर्व की भावना।
- इंद्रिय सुख - वह आनंद जो शरीर को संगीत, यौन और व्यक्तिगत ध्यान सेवा से मिलता है।
- समृद्धि - सफलता के साथ आने वाली संतुष्टि और आश्वासन।

ये सुख स्वाभाविक रूप से मानवीय हैं और न तो नैतिक हैं और न ही अनैतिक। हास्य, कार्य या यौन से संबंधित किसी भावना को महसूस करना तटस्थ है। पद 9-10 में सुलैमान कहते हैं कि उसने इन सभी भावनाओं का उनके उचित संदर्भों में और प्रचुर मात्रा में अनुभव किया (यहाँ कोई पाप नहीं है)।

किन्तु मैंने जो कुछ किया था जब उस पर दृष्टि डाली और अपने किये कठिन परिश्रम के बारे में विचार किया तो मुझे लगा यह सब समय की बर्बादी थी! यह ऐसा ही था जैसा वायु को पकड़ना। इस जीवन में हम जो कुछ श्रम करते हैं उस सबकुछ का उचित परिणाम हमें नहीं मिलता।

- सभोपदेशक 2:11

ग्यारहवें पद में वह अपने निर्णय देते हैं कि इन महान सुखों का अनुभव करने से उन्हें क्या सिखने को मिला है (यह नहीं कि सुख बुरा है!)।

उनका निष्कर्ष यह है कि यद्यपि "भावनाएँ" वास्तविक थीं और आनंद सुखद और प्रामाणिक था, वे स्थायी नहीं थीं और इसलिए कुछ बड़ा और स्थायी उत्पन्न करने के लिए जमा नहीं हुई।

उदाहरण के लिए, आज कल का कल का रात का खाना, फिल्म या यौन अनुभव कितना संतोषजनक है?

हमारे पास इस घटना की याद है और यहां तक कि सुख की भी याद है, लेकिन सुख स्वयं चला गया है। इंद्रिय सुखों को जमा या संग्रहित नहीं किया जा सकता → वे क्षणिक और अस्थायी होते हैं।

हमें वैध और अवैध सुख के बीच का अंतर समझना चाहिए। वैध सुख क्षणिक होता है और आपको केवल अधिक की इच्छा छोड़ता है। अवैध सुख भी क्षणिक होता है, लेकिन यह आपको अपराधबोध और शर्मिंदगी महसूस कराता है।

सुलैमान निष्कर्ष निकालता है कि सुख की खोज (यहाँ तक कि वैध सुख भी) व्यर्थ है क्योंकि संतोष की खोज में कोई लाभ नहीं है। वह घोषणा करता है कि अपनी खोज के अंत में वह उतना ही असंतुष्ट था जितना कि शुरुआत में था।

सारांश

इंद्रिय सुख की खोज आम आदमी का पहिया है। यह वह कारण है जो अधिकांश लोगों को बहुत अधिक मेहनत करने, बहुत तेज़ जीवन जीने, और बहुत कम उम्र में मरने पर मजबूर करता है। हमारा समाज हमें वह सब कुछ प्रदान करने के लिए तैयार है जो अच्छा महसूस होता है, उस चीज़ के स्थान पर जो वास्तव में अच्छी है। हम चूहा दौड़ में जीते और मरते हैं ताकि वह प्राप्त कर सकें जो हमें संतुष्ट करे, और इसे उन चीज़ों का पीछा करके प्राप्त करने की कोशिश करते हैं जो केवल हमें अच्छा महसूस कराती हैं लेकिन हमारी मूल आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकतीं:

- सुरक्षा
- घर
- स्थिति/शक्ति
- कार
- शिक्षा
- मनोरंजन
- कपड़े
- यौन
- स्वतंत्रता

कभी-कभी हम खुद को यह भ्रम देते हैं कि यह सुख की खोज वास्तव में आध्यात्मिक है क्योंकि हम अन्य मसीहीयों के साथ दौड़ लगाते हैं।

- हम एक-दूसरे के साथ व्यापार करते हैं।
- हम एक-दूसरे के सामने अपनी स्थिति, कपड़े और धन दिखाते हैं।

दौड़ जिसमें हमें भाग लेना चाहिए वह जीवन के मुकुट के लिए दौड़ है! यह दौड़ उस चीज़ के लिए प्रयास करती है जो अच्छी है, न कि वह जो हमें अच्छा महसूस कराए। यहीं आध्यात्मिकता और कामुकता के बीच अंतर है। सुलैमान ने सीखा कि कामुकता कई कारणों से एक मृत अंत थी:

1. सुख की खोज बहुत कुछ वादा करती है लेकिन कम ही पूरा करती है। जो भी वादा कामुक सुख करते हैं, वे या तो उतने अच्छे नहीं होते जितना वे वादा करते हैं या केवल थोड़े समय के लिए टिकते हैं। यदि वे अवैध हैं तो वे शर्म और अपराधबोध भी लाते हैं।
2. सुख की खोज हमारे जीवन को बेहतर बनाने का वादा करती है लेकिन वास्तव में हमारे जीवन में केवल कामुक सुखों से शायद ही कभी कोई बदलाव या सुधार होता है (चाहे मैं किसी संगीत कार्यक्रम का कितना भी आनंद लूं, मेरा जीवन शायद ही इससे बदले)। फिर भी, यदि यह अवैध है, तो यह मेरा जीवन और खराब कर देता है।
3. सुख की खोज हमारी आवश्यकताओं को पूरा करने का वादा करती है लेकिन अंत में हमारी आवश्यकताएं हम पर मांग बनाए रखती हैं या हम अक्सर निराश हो जाते हैं, यह महसूस करते हुए कि हमारी आवश्यकताएं कभी पूरी नहीं होंगी। यदि हमारे सुख पापी हैं, तो हमारी आवश्यकताएं असंतोषजनक लालसाओं में बदल जाती हैं।

मैं यह नहीं कह रहा कि आनंद गलत है। मैं यह कह रहा हूँ कि वैध आनंद जीवन में अर्थ, पूर्णता और संतुष्टि पाने के लिए अनुसरण करने का मार्ग नहीं है। अवैध आनंद खतरनाक होता है क्योंकि यह सामान्य मानवीय आनंदों का आनंद लेने की हमारी क्षमता को नष्ट कर देता है और हमें आत्म-विनाश की ओर ले जाता है। परमेश्वर ने हमें हर प्रकार के आनंद का आनंद लेने की क्षमता दी है, लेकिन आनंद की खोज हमें पूर्णता, शांति और आत्मा की गहरी संतुष्टि की ओर नहीं ले जाती।

हमें उस प्रकार की संतुष्टि की आवश्यकता है जो हमारे साथ बनी रहे और जीवन भर जमा होती रहे। ऐसी चीजें जो:

- जो वे वादा करते हैं उसे पूरा करें
- हमें बेहतर व्यक्ति बनाएं
- हमारी सबसे बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करें

सुलैमान अपने पत्रिका के अंत में उनका उल्लेख करता है (ईश्वर के प्रति विश्वास और सच्ची आज्ञाकारिता)। ये बातें महान उपहार देती हैं और हमारे सम्पूर्ण अस्तित्व के हर भाग को प्रभावित करने वाले निरंतर दैनिक आनंद का स्रोत हैं। दो अन्य भी पहले जैसे हैं:

- मसीह का ज्ञान (उसके साथ एक संबंध)
- पवित्र आत्मा के प्रति समर्पण।

सुख की खोज यदि संतोष, ज्ञान या आनंद के लिए की जाए तो वह निराशा, भ्रम और असंतोष में समाप्त होती है। यदि ऐसा है, तो कोई पूछ सकता है, "फिर सुख किस लिए है?" सुख आनंद और धन्यवाद के लिए है, न कि

संग्रह करने या दुरुपयोग के लिए। केवल परमेश्वर पर विश्वास और आज्ञाकारिता, मसीह के साथ संबंध और पवित्र आत्मा का वास ही मनुष्य की गहरी लालसाओं को सच्चाई से संतुष्ट कर सकता है। फिर कोई पूछ सकता है, "यह क्यों है?" इंद्रिय सुख केवल "त्वचा तक" सीमित होता है और मांस के लिए बनाया गया है।

शांति और आनंद की लालसा मनुष्य की आत्मा से आती है और इसलिए इनको संतुष्ट करने के लिए आध्यात्मिक चीज़ों की आवश्यकता होती है। यह संदर्भ का प्रश्न है। दीर्घकालिक संतुष्टि केवल दीर्घकालिक चीज़ों से ही उत्पन्न हो सकती है जैसे विश्वास, आशा और मसीह के नाम में प्रेमपूर्ण सेवा। इंद्रिय सुख, यहां तक कि सबसे सकारात्मक परिस्थितियों में भी, मांस को क्षणिक रूप से प्रसन्न करने के लिए परमेश्वर द्वारा बनाए गए हैं। दूसरी ओर, आध्यात्मिक सुख को परमेश्वर ने अनंतकाल तक टिकने के लिए बनाया है।